पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग

एवं

अंकुर रंगमंच समिति, उज्जैन (राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली)

के संयुक्त तत्त्वावधान में आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम श्रृंखला के अंतर्गत

आयोजित

एक दिवसीय नाट्य मंचन कार्यक्रम दिनांक 14.03.2022, दिन– सोमवार

को समय 2:00 बजे अपराह्न से 4:00 बजे

अपराह्न तक पुरा अतिथि गृह, नेहू में आप सादर आमंत्रित है।

North-Eastern Hill University, Shillong

Cordially invites you to

One Day Drama Programme

Organized in collaboration with

Ankur Natya samiti, Ujjain (National School of Drama, New Delhi)

under the *AZADI KA AMRIT MAHOTSAV* programme series

on 14.03.2022 on 2:00 Pm to 4:00 PM.

Venue : Old Guest House Auditorium, NEHU.

(Prof. M. P. Pandey)
Coordinator
Azadi ka Amrit Mahaotsav Committee, NEHU

(Prof. D. Kharmawphlang)
Co-Coordinator
Azadi ka Amrit Mahaotsav Committee,NEHU

(Prof H K Mishra)
Coordinator of the Programme
Deptt. of Hindi, NEHU

आज़ादी का अमृत महोत्सव

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के सहयोग से

(रंगविस्तार योजना के तहत)

दिनांक 09.03.22 से 14.03.2022 तक पूर्वोत्तर राज्यों में

अंकुर रंगमंच समिति, उज्जैन (म.प्र.) की प्रस्तुति

लोक शैली तुर्रा कलंगी पर आधारित महाकवि मास रचित

मध्यम व्यायोग

रूपांतरण एवं निर्देशन – हफीज़ खान

प्रस्तुति विवरण

दिनांक 09.03.22 माईम एकेडमी - हिदायतपुर, गुवाहाटी

दिनांक 10.03.2022 रंगालय स्टूडियो थियेटर -पुरानीगुडम,नगाव

दिनांक 11.03.2022 फर्कांटिंग कॉलेज आडिटोरियम - फर्कांटिंग

दिनांक 12.03.2022 एमेच्योर थियेटर सोसायटी - गोलाघाट

दिनांक 14.03.2022 ओल्ड गेस्ट हाउस ऑडिटोरियम नॉर्थ-ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी, शिलांग, मेघालय

सम्पर्क अकुंर रंगमंच समिति, विशाल स्टील, 64, फव्वारा चौक, उज्जैन (म.प्र.) मो. 98685-11508

निर्देशक –

हफीज़ ख़ान ने राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से सन् 1981 में स्नातक किया। वो रंगमंच में लगातार सक्रिय रहे हैं, विशेषकर बाल रंगमंच के क्षेत्र में। रानावि की संस्कार रंग टोली के वे संस्थापक सदस्य हैं । रानावि द्वारा देश भर में आयोजित अनेक कार्यशालाओं में बतौर प्रशिक्षक काम कर चुके है । उज्जैन में जन्मे हफीज का रूझान सदैव वहाँ की लोक–कलाओं की ओर रहा । मौजूदा प्रस्तुति एक कार्यशाला का ही परिणाम है।

निर्देशकीय –

तुर्राकलँगी कार्यशाला मैंने दिसम्बर 2014 में घोसुंडा, ग्राम चित्तौड़ में की थी। करीब 20 कलाकारों एवं कलँगी के उस्ताद मिर्ज़ा अकबर बेग कागजी व तुर्रा के उस्ताद नारायण जी जोशी और कुछ युवाओं के साथ कार्यशाला आरम्भ हुई। इसमें तुर्राकलँगी के कलाकार भी शामिल थे। मैं अपने आप को लगभग 300 वर्ष पूर्व इतिहास के ऐसे इंद्रलोक में महसूस करने लगा जहाँ तुर्राकलँगी ख्याल का और ख्याल माच का रूप धारण कर रहे थे। संगीत की बारीकियों और राग–रागनियों को अपवाद स्वरूप छोड़ दें तो लय, ताल, अभिनय शैली, गायकी, किस्सा, कथा कहानियाँ जो हमें माच में मिलती हैं वहीं इस सब में था। प्रस्तुति के लिए संस्कृत के महान नाटककार महाकवि भास के संस्कृत नाटक 'मध्यम व्यायोग' का चयन किया गया। इस प्रस्तुति को हम तुर्राकलँगी ख्याल और माच का एक गुलदस्ता कह सकते है। उज्जैन के माच कलाकारों के साथ प्रस्तुति आपके सामने है।

तुर्रा कलंगी – लोक नाट्य शैली

माच मध्यप्रदेश के मालवा क्षेत्र की लोक नाटक शैली है, जिसकी शुरूआत उज्जैन में भागसीपुरा के गुरू गोपाल जी ने की थी। तुर्राकलँगी इस संगीतमय संवाद शैली की शुरूआत तुख़नगीर और शाह अली नाम के दो फ़कीर संतों ने की थी। तुख़नगीर एक गोसाई संत थे, भगवा कपड़े पहनते थे और शिव की आराधना करते थे। शाह अली एक मुस्लमान फकीर थे, हरे रंग के वस्त्र धारण करते थे और शक्ति की पूजा करते थे। इन दोनों की लोक–कलाओं में काफी समानता है।

नाटक सार –

पाँडवों के अज्ञातवास के दौरान अपने तीन पुत्रों के साथ वन क्षेत्र से गुजरते एक ब्राह्मण परिवार का सामना वन में ही अपनी माँ के लिए भोजन की तलाश कर रहे घटोत्कच से होता है जो उनमें से एक को अपनी माँ के भोजन के लिए ले जाने को दृढ़संकल्पित है। बड़े पुत्र पर पिता और छोटे पुत्र पर माँ के अत्यधिक स्नेह के कारण बीच का पुत्र स्वयं को हिडिम्बा के भोजन के लिये प्रस्तुत करता है। जल लाने की अनुमति लेकर वह पास के सरोवर की ओर जाता है। उसके लौटने में विलम्ब होने के कारण घटोत्कच मध्यमा–मध्यमा पुकारता है। पाँडवों के मध्यम (बीच के) भाई भीम उसी वन में थे और ये पुकार सुनकर उसके पास आते हैं। सारा वृतान्त ज्ञात होने पर वह स्वयं को हिडिम्बा के भोजन के लिए प्रस्तुत करते हैं। लेकिन इसके लिए घटोत्कच को युद्ध में उन्हें हराना होगा। घटोत्कच मल्लयुद्ध में भीम को पराजित करता है और हिडिम्बा के सामने उन्हें प्रस्तुत करता है, जहाँ उसे पता चलता है कि भीम उसके पिता है।

नाटककार –

भास (5वीं शताब्दी ई.पू.) एक भारतीय नाटककार थे जो संस्कृत में लिखते थे। उनके कार्य खो चुके थे, जब तक की 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में पाण्डुलिपियाँ फिर से नहीं मिल गई। उनके कुछ उपलब्ध नाटक है – स्वप्नवासवदत्ता, प्रतिभा–नाटक, पंच–रात्र, मध्यम व्यायोग, दूत घटोत्कच, उरूभंगम, कर्णभारम्, हरिवंश, अभिषेक नाटक आदि।

अंकुर रंगमंच समिति के बारे में –

अंकुर रंगमंच समिति उज्जैन ने विगत 4 दशकों से रंगमंच, शैक्षिक रंगमच, बाल रंगमंच, लोकनाट्य, साहित्य एवं कला माध्यमों को लेकर शिक्षा, साक्षरता, स्वास्थ्य, जन विज्ञान और सामाजिक न्याय–संदर्भ के नाट्य महोत्सवों, नाट्य शिविरों, कार्यशालाओं एवं नाट्य प्रस्तुतियों का आयोजन किया है। अंकुर मंच ने संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, संगीत नाटक अकादमी, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली, मध्यप्रदेश कला परिषद्, मध्यप्रदेश संग्रहालय, कालिदास अकादमी, उज्जैन के अलावा कई स्थानीय संस्थाओं के साथ मिलकर रंग–शिविरों और नाट्य समारोहों का आयोजन एवं उनमें भागीदारी की है। मालवा माच के लोक व्याधीकरण हेतु मालवा माच 1999, 2005, 2007, 2016, 2017, 2018 एवं 2019 के आयोजन विशेष रूप से चर्चित रहे है।

Two plays were staged under the banner of Azadi ka Amrit Mahotsav celebrating the 75 Years of Independence on 14th March 2022 at the Old Guesthouse Auditorium NEHU. The first play titled Madhyam-Vyayog was a classic Sanskrit play written by Sanskrit poet and playwright Mahakavi Bhasa. This drama was in Tura kalangi style from Malwa and was presented by Ankur Natya Samiti, Ujjain. It was directed by a very senior NSD artist Mr Hafiz Khan. The second drama was Raja Harishchandra. It was a traditional drama based on the Maach folk style of Malwa and presented by Rangotsav Natya Samiti, Ujjain. It was directed by well-known director Babulal Devda. This programme was sponsored by the National School of Drama (NSD), New Delhi.

आज़ादी का अमृत महोत्सव

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के सहयोग से (EPD.N.E.R.स्कीम के तहत)

(रंगविस्तार योजना के तहत)

दिनांक 09.03.22 से 14.03.2022 तक पूर्वोत्तर राज्यों में

रंग उत्सव, उज्जैन (म.प्र.) की प्रस्तुति

लोक नाट्य माच

राजा हरिश्चन्द्र

लेखक – सिद्धेश्वर सेन

निर्देशन – बाबुलाल देवड़ा

समन्वयक – राजेन्द्र चावड़ा

प्रस्तुति विवरण

दिनांक 09.03.22 माईम एकेडमी - हिदायतपुर, गुवाहाटी

दिनांक 10.03.2022 रंगालय स्टूडियो थियेटर -पुरानीगुडम,नगाव

दिनांक 11.03.2022 फर्कांटिंग कॉलेज आडिटोरियम - फर्कांटिंग

दिनांक 12.03.2022 एमेच्योर थियेटर सोसायटी - गोलाघाट

दिनांक 14.03.2022 ओल्ड गेस्ट हाउस ऑडिटोरियम नॉर्थ-ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी, शिलांग, मेघालय

सम्पर्क - रंगउत्सव, उज्जैन 20/2, शास्त्रीनगर, उज्जैन (म.प्र.)मो. 98274-45665, 86023-05092

निर्देशक –

11 अक्टूबर 1963 को उज्जैन जिले के ग्राम नयाखे में जन्में बाबुलाल देवड़ा ने 15 साल की उम्र में लोकगीत तेजाजी महाराज की कथा से जुड़ने के बाद लोकनाट्य 'माच' के क्षेत्र में पदार्पण का निश्चय किया। गुरू श्री सिद्देश्वर जी सेन और बड़े भाई रतन महाराज लोकेश सेन से मालवा के माच की प्रेरणा मिली। पहली बार माच में इन्हें कोरस गाने में बिठाया गया था। बाद में गुरू के देहान्त के बाद उन्होंने इसी प्रथा को आगे बढ़ाया। लगभग 40 वर्षों से माच के क्षेत्र में अपनी कार्यशैली से देश भर में प्रसिद्धि पा रहें हैं। और निरंतर इस विधा को जीवित रखने के लिये प्रयासरत है।

राजा हरिशचन्द्र - कथासार

सत्यवादी राजा हरिशचन्द्र यज्ञ के 99वें सफल आयोजन हो चुके है। सौवें यज्ञ के आयोजन के समय ऋषि विश्वामित्र ने सोचा कि यदि यज्ञ पूर्ण हो जाता है तो इन्द्र का आसन हरिशचन्द्र छीन लेंगे। हरिशचन्द्र की सत्यता को परखने हेतु ऋषि विश्वामित्र साधु का वेष धारण करते है और कन्या के विवाह के नाम पर भिक्षा में राजकोष की चाबी और घोड़े की लगाम माँग लेते है। हरिशचन्द्र चूँकि वचन से बंधे रहते है। विश्वामित्र को चाबी व लगाम दान में दे देते है। कुटिलता से विश्वामित्र राजपाट छीन कर उन पर साठ बार सोने का कर्ज भी निकाल देते है। इस कर्ज को उतारने के लिये राजा हरिशचन्द्र अपनी पत्नी तारा और बेटे रोहित को ब्राह्मण के हाथों बेच देते है और स्वयं चण्डाल के हाथों बिक जाते है।

बेटे रोहित की साँप के काटने से मौत हो जाती है। माता तारावती उसके कफन के लिये आधी साड़ी दे देती है। श्मशान में हरिश्चन्द्र चाण्डाल के सेवक है। रोहित के संस्कार हेतु तारा से कर माँ गते है। चाण्डाल भी तारा पर डाकन होने का लांछन लगा देता है। बनारस के राजा चाण्डाल को तारा का सिर धड़ से अलग करने का आदेश देते हैं। चाण्डाल अपने सेवक हरीशचन्द्र को यह आदेश देता है। हरिश्चन्द्र तलवार से वार तारा पर करते है। यह करूण दृश्य देखते हुए भगवान विष्णु प्रकट होते है और हरिश्चन्द्र के सत्यवादी होने की प्रशंसा करते है। हरिशचन्द्र को उनका राज पाट, सत्ता सब वापिस मिल जाता है।

रंग उत्सव उज्जैन संस्था परिचय

सन् 2004 में रंग उत्सव उज्जैन संस्था का गठन किया गया। उसी वर्ष भारतीय कालिदास समारोह में नाटक 'प्रवीर अर्जुन' का मंचन वर्ष 2005 में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की प्रतिष्ठा आयोजन भारत रंग महोत्सव में नाटक 'अभंग गाथा'। वर्ष 2006 में जोधपुर बीकानेर में तीर्थंकर चरित्र भगवान पार्श्वनाथ के जीवन पर आधारित लाईट एण्ड साउण्ड प्रस्तुति। वर्ष 2006 दक्षिण मध्य सांस्कृतिक केन्द्र नागपुर द्वारा बहुभाषीय नाट्य समारोह विशाखापट्टनम में 'अभंग गाथा'। 2007 बाल संगम राष्ट्रीय लोक उत्सव, दिल्ली में 'राजा भर्तृहरि' माच की प्रस्तुति। 2008 बाल रंग मण्डल, भोपाल द्वारा आयोजित बाल नाट्य समारोह में 'चन्द्रशेखर आजाद' की प्रस्तुति। 2009 में मत्खई महोत्सव बलांगिर उड़ीसा में नाटक 'छुपमछुपैया'। 2010 में पश्चित सांस्कृतिक केन्द्र उदयपुर में 'छुपम छुपैया' 'मियां की जूती मियां के सिर' का मंचन। राजा भोज महोत्सव धार में 'मालवकुमार भोज' मंचन। वर्ष 2012 अभिव्यक्ति देवास में नाटक 'एक लड़की पाँच दीवाने'। वर्ष 2013 नाट्य उत्सव धार में 'तारीख गवाह' का मंचन। वर्ष 2014 नाट्य उत्सव धार में 'पृथ्वीराज चौहान' का मंचन। वर्ष 2014 कालिदास संस्कृत अकादेमी की ओर से झाबुआ में मध्यम व्यायोग मंचन, वर्ष 2015 संस्कृत नाट्य समारोह उज्जैन में भास नाट्य का मंचन। वर्ष 2016 मध्यप्रदेश लोककला अकादमी की ओर से 'भास नाट्य' मंचन। वर्ष 2016 धार्मिक पर्यटन की आरे से जबलपुर गवारी घाट पर 'नर्मदा महात्म्य' का मंचन। वर्ष 2016 से निरन्तर धार्मिक पर्यटन व जिला प्रशासन उज्जैन की ओर से रामघाट राणोजी की छत्री पर 'उजयिनी गाथा' का मंचन। वर्ष 2017 में भास रचित नाटकों का मंचन कालिदास अकादमी। वर्ष 2018 में संस्कृत बाल नाट्य समारोह में 'रघुवंशम्' नाट्य मंचन। वर्ष 2019 कालिदास अकादमी में 'मालविकाग्निमित्रम्' शिवमंगलसिंह 'सुमन' स्मृति में 'कुमारसंभवम्', गांधी यात्रा नुक्कड़ नाटक, भोज महोत्सव धार जनजातीय संग्रहालय भोपाल, 'गांधी के सपने', उमा सांझी महोत्सव में 'ओड़का'। कार्तिक मेला उज्जैन में 'बेटा बचाओ बेटी पढ़ाओ'। वर्ष 2020 फाग उत्सव चार दिवसीय लोक उत्सव। शिवकुमार चवरे को समर्पित लोक मंगल उत्सव के 4 दिवसीय समारोह में कालिदास अकादमी, उज्जैन के अभिरंग नाट्यग्रह में उन्हीं के द्वारा लिखित नाटक तमसा तट की प्रस्तुति।

On the occasion, the Vice-Chancellor of the university professor P. S. Shukla and a large number of NEHU fraternity were present and applauded the presentation. The vice-Chancellor honoured the artists with phulam gomchha. Addressing the gathering he said that such a presentation makes the campus vibrant and inculcates universal human values among the students. Such types of programs must be organised from time to time.

Some photographs of the event are given below:

North-Eastern Hill University, Shillong
AZADI KA
AMRIT MAHOTSAV

North-Eastern Hill University, Shillong
AZADI KA
AMRIT MAHOTSAV

North-Eastern Hill University, Shillong

North-Eastern Hill University, Shillong
AZADI KA

North-Eastern Hill University, Shillong
AZADI KA
AMRIT MAHOTSAV

North-Eastern Hill University, Shillong
AZADI KA